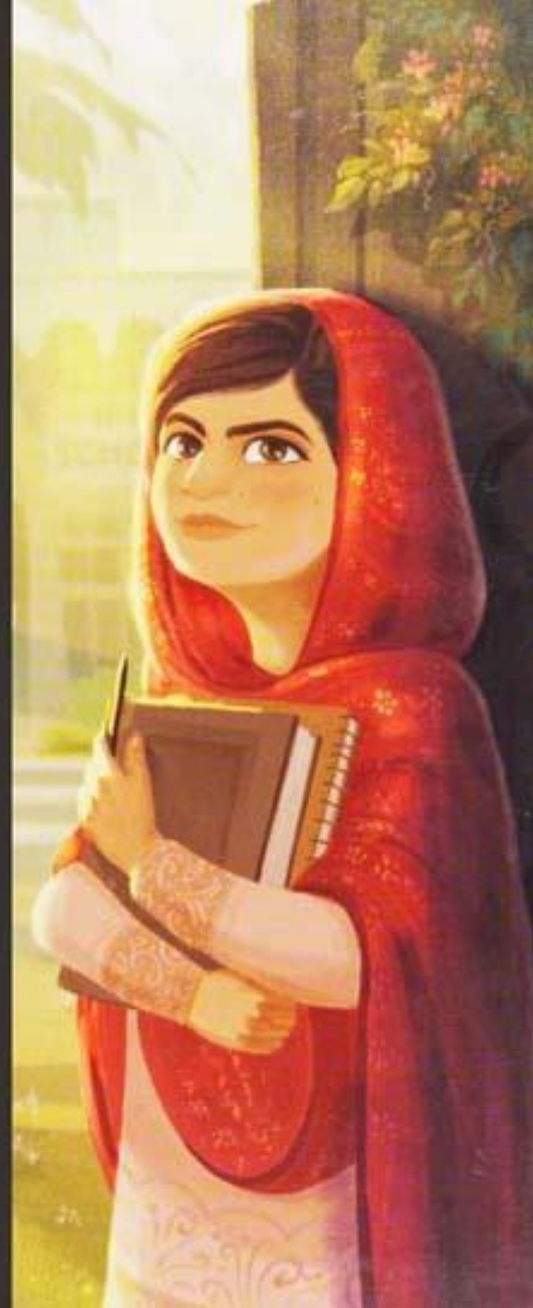
सीखने के अधिकार के लिए

मलाला यूसुफजई

की कहानी



रेबेका लैंगस्टन-जॉर्ज

चित्र : जनना बॉक

सीखने के अधिकार के लिए

मलाला यूसुफजई

की कहानी

रेबेका लैंगस्टन-जॉर्ज

चित्र : जनना बॉक

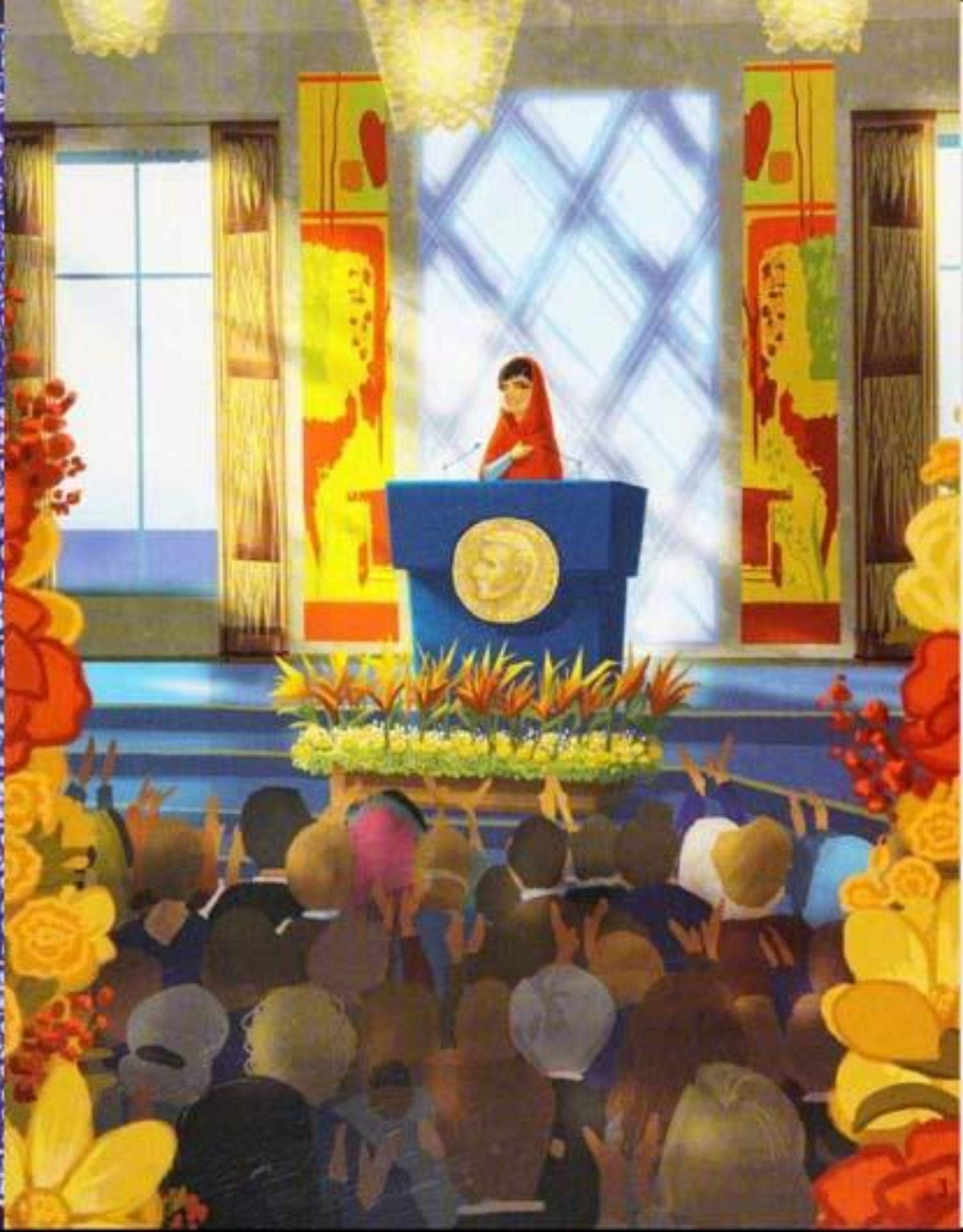


मुश्किल से 5 फीट ऊंची और महज 17 साल की उम्र में, पाकिस्तान की एक स्कूली छात्रा माइक्रोफोन के सामने खड़ी थी. वो बहुत साहसी थी. उसे सुनने के लिए दुनिया के नेता आगे की ओर झुके. मलाला यूसुफजई ने ओस्लो, नॉर्वे में नोबेल शांति पुरस्कार स्वीकार किया. कैमरों ने दुनिया भर में उसके संदेश को प्रसारित किया.

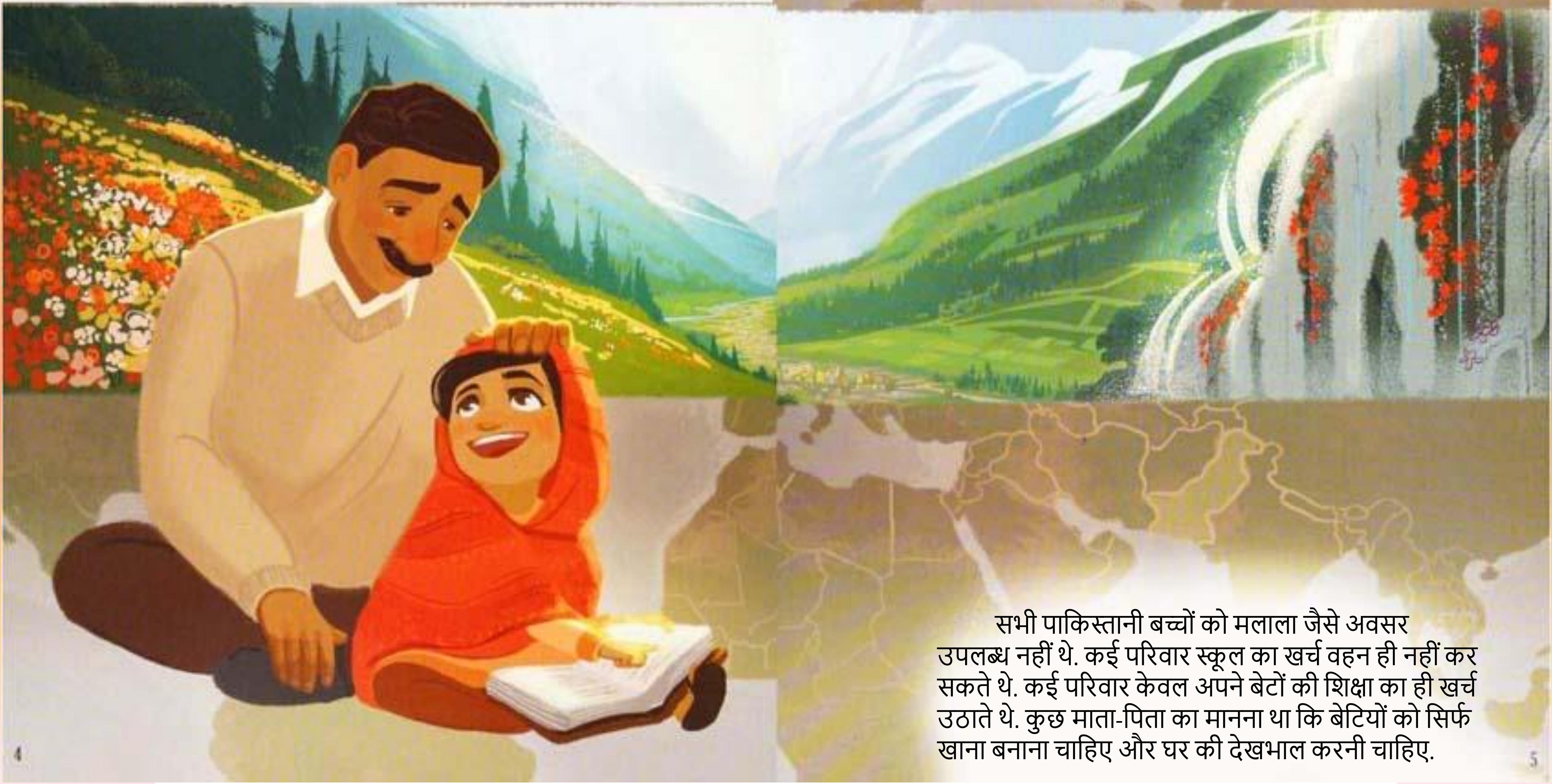
उसके अपने देश में, पब्लिक में बोलने के लिए किसी महिला को पीटा जा सकता था. लेकिन मलाला डरी नहीं. वो शक्ति और साहस से ओत-प्रोत थी. 10 दिसंबर 2014 को वो सबसे कम उम्र की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता बनी. मलाला ने हर गरीब-पिछड़े बच्चे के लिए अपनी आवाज उठाई.

"यह पुरस्कार सिर्फ मेरे लिए नहीं है.
यह उन सभी भूले-बिसरे बच्चों के लिए है जो शिक्षा चाहते हैं.
यह उन भयभीत बच्चों के लिए है जो शांति चाहते हैं.
यह उन मूक बच्चों के लिए है जो बदलाव चाहते हैं."

मलाला, समान शिक्षा की आवाज बन गई थी. उसे पाने के लिए उसने लगभग अपनी जान गंवा दी थी.



मलाला की खुद की अपनी पढ़ाई जल्दी शुरू हुई. उसके पिता जियाउद्दीन यूसुफजई, मिंगोरा में एक स्कूल चलाते थे. मिंगोरा, पाकिस्तान की स्वात घाटी में बर्फ से ढके पहाड़ों से घिरा एक शहर है. जब से उसने चलना शुरू किया तभी से वो स्कूल गई. मलाला को अपने स्कूल से बहुत प्यार था.



सभी पाकिस्तानी बच्चों को मलाला जैसे अवसर उपलब्ध नहीं थे. कई परिवार स्कूल का खर्च वहन ही नहीं कर सकते थे. कई परिवार केवल अपने बेटों की शिक्षा का ही खर्च उठाते थे. कुछ माता-पिता का मानना था कि बेटियों को सिर्फ खाना बनाना चाहिए और घर की देखभाल करनी चाहिए.

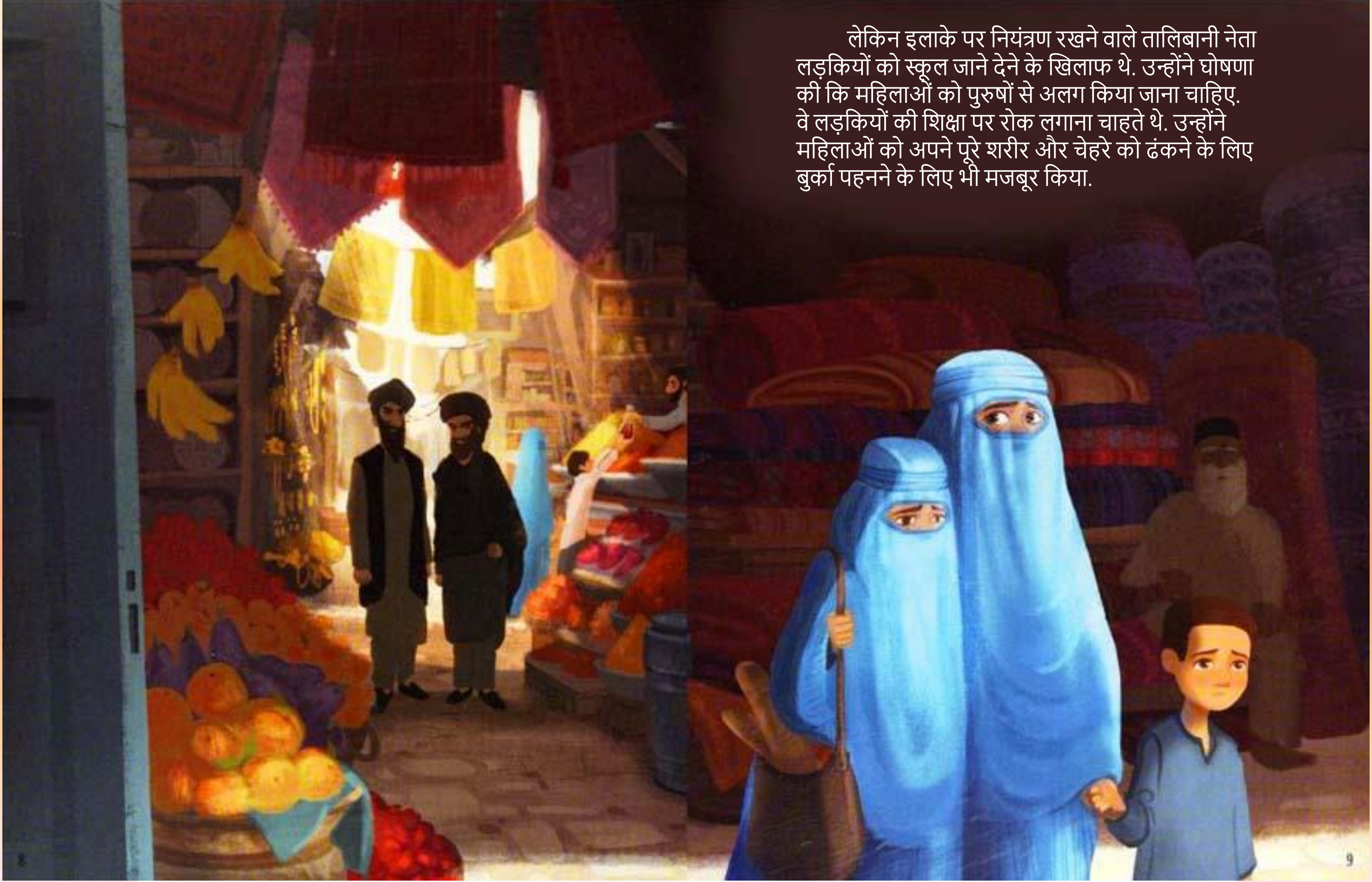


मलाला की मां ने भी बचपन में पढ़ना-लिखना नहीं सीखा था. लेकिन मलाला के पिता का मानना था कि लड़कियों को, लड़कों की तरह ही, शिक्षा दी जानी चाहिए. उन्होंने मलाला और उसके छोटे भाइयों - खुशाल और अटल को, पढ़ाई करने के लिए प्रोत्साहित किया. उन्होंने कई गरीब बच्चों को भी अपने स्कूल में मुफ्त में शिक्षा दी.

मलाला, स्कूल में फली-फूली. उसने कड़ी मेहनत की और कई ट्राफियां और पुरस्कार जीते. वो न केवल अपनी मूल पश्तो भाषा बोल और लिख सकती थी, बल्कि वो धाराप्रवाह अंग्रेजी और उर्दू भी बोल सकती थी. उर्दू, पाकिस्तान की राष्ट्रीय भाषा थी.

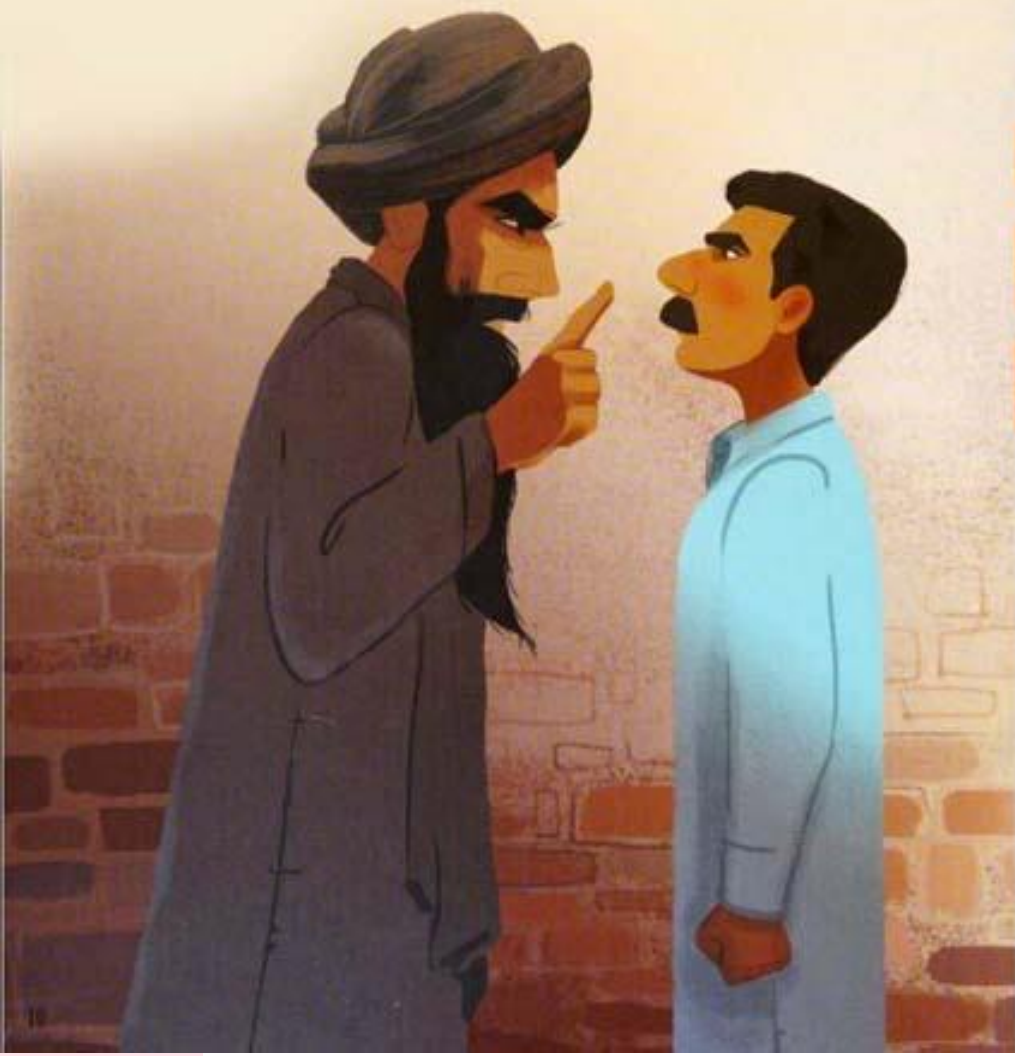






लेकिन इलाके पर नियंत्रण रखने वाले तालिबानी नेता लड़कियों को स्कूल जाने देने के खिलाफ थे. उन्होंने घोषणा की कि महिलाओं को पुरुषों से अलग किया जाना चाहिए. वे लड़कियों की शिक्षा पर रोक लगाना चाहते थे. उन्होंने महिलाओं को अपने पूरे शरीर और चेहरे को ढंकने के लिए बुर्का पहनने के लिए भी मजबूर किया.

तालिबान के सदस्यों ने स्कूल के मालिकों को धमकाया. एक ने जियाउद्दीन को उसका स्कूल बंद करने का आदेश दिया क्योंकि स्कूल में लड़के-लड़कियां, केवल एक ही प्रवेश द्वार का उपयोग करते थे. जब मलाला के पिता ने मना किया, तो तालिबान ने शिक्षकों को बहुत धमकाया और फिर उनमें से कुछ ने नौकरी ही छोड़ दी.





जियाउद्दीन चिंतित हुए, लेकिन मलाला शांत रही. स्वात की लड़कियां किसी से नहीं डरतीं थीं. वे स्कूल में सफल होने के लिए पहले से कहीं अधिक दृढ़ थी. स्कूल की छुट्टियों में ज्यादातर पाकिस्तानी महिलाएं अपने हाथों पर मेंहदी लगातीं थीं. मलाला ने अपने हाथों पर मेंहदी से विज्ञान के सूत्र और फॉर्मूले लिखे.

तालिबान हर दिन हिंसा और धमकियाँ देकर मज़बूत हो रहे थे. जैसे-जैसे उनकी ताकत बढ़ी, वैसे-वैसे उन्होंने और कड़े नियम बनाए. अब मर्द, दाढ़ी नहीं बना सकते थे. महिलाओं के लिए चेहरा ढंकना ज़रूरी था. फिल्मों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था. तालिबान के उपदेश, स्वात घाटी में रेडियो के ज़रिए गूंज रहे थे.





मलाला की मातृभूमि में डर फैल गया. जो कक्षाएँ कभी पूरी भरी होती थीं, उनमें अब कई सीटें खाली थीं. तालिबानी नेताओं ने रेडियो पर उन लोगों के बारे में डींग मारी जिन्हें उन्होंने ज़बरदस्ती स्कूल जाने से रोका था. "हम उन "आदब-तरीन" को बधाई देते हैं जिन्होंने स्कूल जाना बंद कर दिया है."





शिक्षा के महत्व पर जोर देने के लिए जियाउद्दीन ने टीवी बहसों में लड़ाई लड़ी. उनके साथ मलाला भी आई. जब एक रिपोर्टर ने मलाला से उसकी राय पूछी तो उसने कहा. "मेरी शिक्षा का मूल अधिकार छीनने की, तालिबान की हिम्मत कैसे हुई!"

बाद में उन्हें स्कूल के गेट पर टेप से चिपका हुआ एक पत्र मिला. "... आप जो स्कूल चला रहे हैं, वो पश्चिमी है ... आप लड़कियों को पढ़ाते हैं ... इसे तुरंत रोकें नहीं तो आप मुसीबत में पड़ जाएंगे ..."

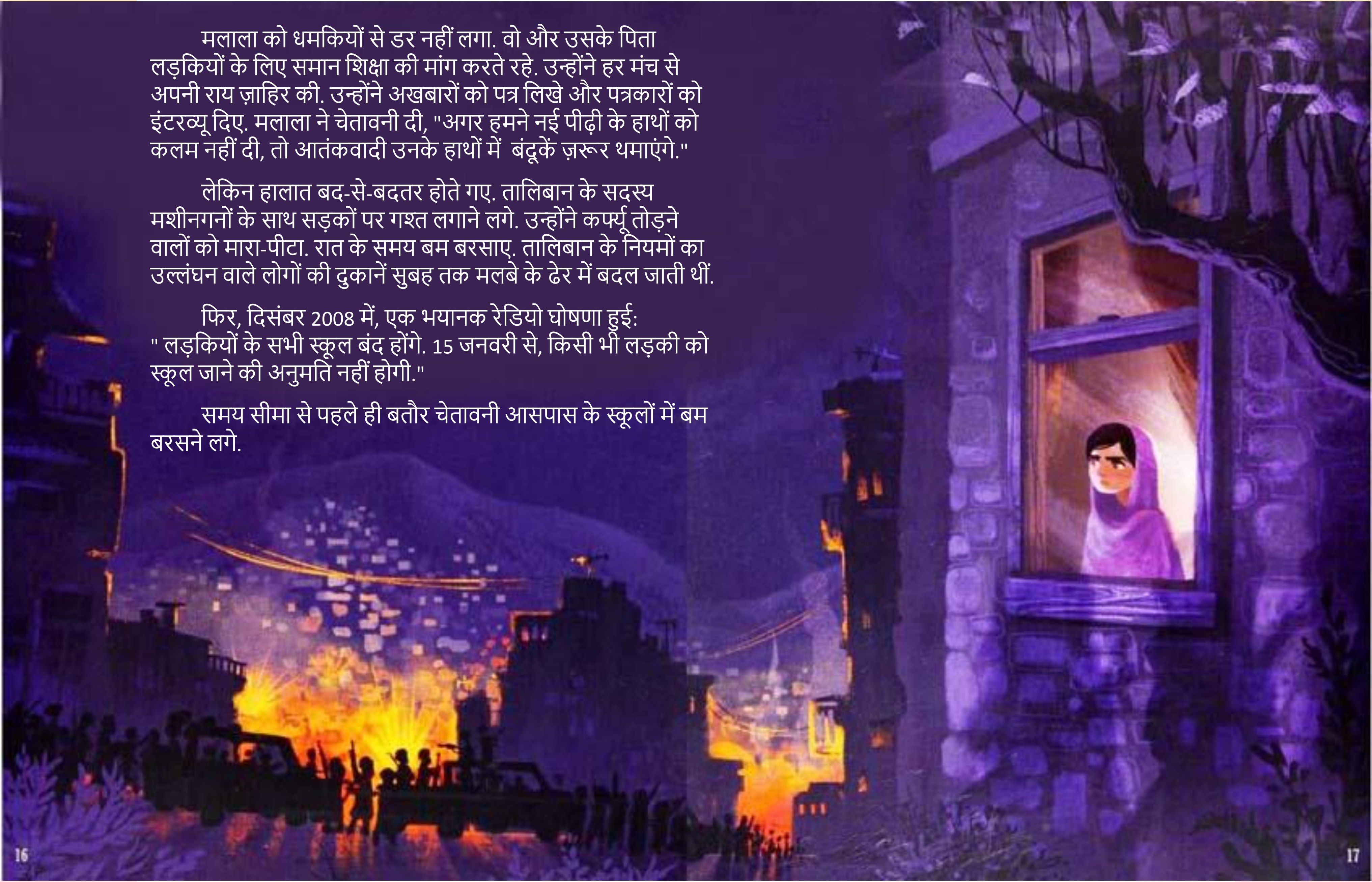


मलाला को धमकियों से डर नहीं लगा. वो और उसके पिता लड़कियों के लिए समान शिक्षा की मांग करते रहे. उन्होंने हर मंच से अपनी राय ज़ाहिर की. उन्होंने अखबारों को पत्र लिखे और पत्रकारों को इंटरव्यू दिए. मलाला ने चेतावनी दी, "अगर हमने नई पीढ़ी के हाथों को कलम नहीं दी, तो आतंकवादी उनके हाथों में बंदूकें ज़रूर थमाएंगे."

लेकिन हालात बद-से-बदतर होते गए. तालिबान के सदस्य मशीनगनों के साथ सड़कों पर गश्त लगाने लगे. उन्होंने कर्फ्यू तोड़ने वालों को मारा-पीटा. रात के समय बम बरसाए. तालिबान के नियमों का उल्लंघन वाले लोगों की दुकानें सुबह तक मलबे के ढेर में बदल जाती थीं.

फिर, दिसंबर 2008 में, एक भयानक रेडियो घोषणा हुई:
" लड़कियों के सभी स्कूल बंद होंगे. 15 जनवरी से, किसी भी लड़की को स्कूल जाने की अनुमति नहीं होगी."

समय सीमा से पहले ही बतौर चेतावनी आसपास के स्कूलों में बम बरसने लगे.



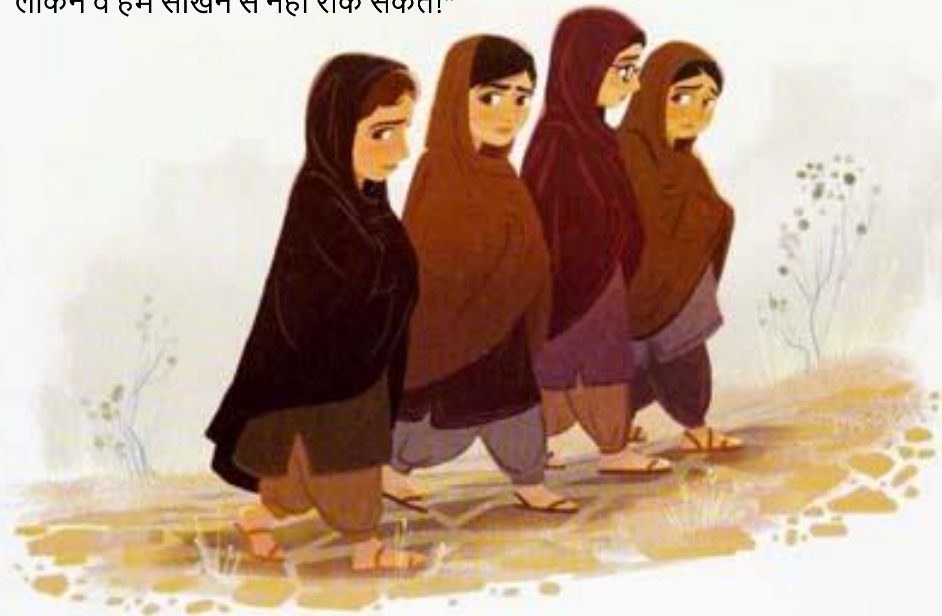


लेकिन बम मलाला को चुप नहीं करा सके. ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन (बीबीसी) चाहता था कि कोई लड़की स्कूलों के बंद होने के बारे में ब्लॉग करे. लड़की ब्लॉगर पहली बार बताएगी कि शिक्षा से वंचित होने पर वो कैसा महसूस कर रही थी. जेल, मारपीट और यहां तक कि बमों के डर से, मलाला के सभी दोस्तों ने अपने अनुभव लिखने से मना कर दिया. लेकिन मलाला ने उन्हें स्वेच्छा से लिखा.

उसने "गुल मकाई" के उपनाम से लिखा. "गुल मकाई" एक पाकिस्तानी महिला थी जिसने बहुत पहले ब्रिटिश दमन के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी. पाकिस्तान में इंटरनेट और बिजली सेवाओं की काफी खस्ता हालत थी. इसलिए "गुल मकाई" ने बीबीसी के एक रिपोर्टर से फोन पर बात की, जिसने अगले दो महीनों तक उसका ब्लॉग टाइप किया. ब्लॉग पहली बार 3 जनवरी 2009 को, उर्दू में प्रकाशित हुआ. जल्द ही मलाला का ब्लॉग बहुत लोकप्रिय हुआ और बीबीसी ने उसका अंग्रेजी में भी अनुवाद किया.



14 जनवरी 2009 को मलाला ने फिर ब्लॉग किया, "मेरी राय में एक दिन स्कूल फिर से खुलेंगे, लेकिन स्कूल से वापिस आते समय मैंने उसकी इमारत की ओर देखा और तब मुझे लगा जैसे कि मैं यहां फिर दुबारा कभी नहीं आऊंगी." मलाला उदास थी लेकिन वो उद्दंड भी थी. "वे हमें स्कूल जाने से रोक सकते हैं, लेकिन वे हमें सीखने से नहीं रोक सकते!"



मलाला जैसी कार्यकर्ताओं का गुस्सा बढ़ता ही गया. अंत में, तालिबान ने 10 वर्ष और उससे कम उम्र की लड़कियों को स्कूल जाने की अनुमति देना शुरू की. लेकिन मलाला 11 साल की थी. मलाला और उसकी सहेलियों ने अपनी नीली स्कूल की वर्दी घर पर छोड़ दी. उन्होंने घर के साधारण कपड़े पहने, और अपने शॉल के नीचे किताबें छिपाईं और अपनी उम्र से छोटे होने का नाटक किया. उम्र के बारे में झूठ बोलना उनके लिए गंभीर रूप से खतरनाक हो सकता था. पकड़े जाने पर छात्रों और उनके शिक्षक की सार्वजनिक रूप से मारा-पीटा जा सकता था.

जीवन हर दिन और खतरनाक होता गया. पाकिस्तान की सेना, तालिबान से लड़ने लगी. गोलियों और लोगों की चीखों से हवा भर गई. किसी की भी, यहां तक कि स्कूली छात्राओं की भी, बहादुरी दिखाने की हिम्मत नहीं हुई. मई 2009 में, सेना ने घोषणा की कि सभी लोगों को शहर खाली करना होगा. सामान से लदी कारों, मोटरसाइकिलों, ट्रकों और गधा-गाड़ियों ने सड़क को जाम कर दिया. तालिबान के सदस्य अपनी मशीनगनों के पीछे से नज़ारा देखते रहे. 20 लाख लोगों ने स्वात घाटी से पलायन किया.

जब मलाला एक छोटे से थैले में कुछ कपड़े भर रही थी तब उसकी आँखों से आंसू छलक पड़े. वो अपनी किताबों को थैले में रखना चाहती थी लेकिन मां ने कहा कि उनके पास किताबों के लिए जगह नहीं थी. उन्हें पीछे छोड़ने से मलाला का दिल टूट गया. मलाला ने प्रार्थना की कि जब वह वापस लौटे तो उसकी किताबें वहां मौजूद हों. अपनी जान बचाकर पलायन करने के लिए मलाला के माता-पिता और भाई, एक पड़ोसी की वैन में सवार हुए.
मलाला अपने दोस्त की कार में बैठी. तालिबान ने पहले ही उसका शिक्षा का अधिकार, और उसकी आवाज छीनने की कोशिश की थी. मलाला ने प्रार्थना की कि अब तो तालिबान उनके पीछे न आएं.



शरणार्थी, स्वात घाटी के बाहर के गांवों में भारी संख्या में इकट्ठे हुए. संयुक्त राष्ट्र ने शरणार्थी के रहने के लिए सफेद तंबू वाले शिविर खोले, लेकिन जल्दी ही वहां बहुत भीड़भाड़ हो गई. साफ-सफाई न होने से बीमारियां फैलने लगीं. शिविरों में तालिबान घुसपैठियों की अफवाहों से, लोगों के दिलों में दहशत बैठ गई. युसुफ़ज़ई परिवार भाग्यशाली था. वहां उनके रिश्तेदार थे जिनके साथ वे रह सकते थे. लेकिन जो दोस्त उन्हें मिंगोरा से लाए थे वे कहीं और जा रहे थे. गाड़ी न होने से युसुफ़ज़ई परिवार को 16 मील गर्म धूप में पैदल चलना पड़ा.





मलाला का 12वां जन्मदिन जुलाई में आया, लेकिन परिवार ने उसका कोई जश्न नहीं मनाया. उस दिन कोई केक और पार्टी नही हुई. वास्तव में, किसी को वो दिन याद भी नहीं रहा. लेकिन मलाला ने अपने जन्मदिन वाले दिन शांति की कामना की.

तीन महीने बाद जब वे वापिस घर लौटे, तब तक लड़ाई खत्म हो चुकी थी लेकिन मिंगोरा बिल्कुल बदल चुका था. दुकानें ध्वस्त हो चुकी थीं. जली हुई कारों के कंकाल सड़कों पर बिखरे पड़े थे. स्कूल की दीवारों पर गोलियों के निशान थे. लेकिन तालिबान का कोई निशान नहीं था. जियाउद्दीन ने कुछ ही दिनों में स्कूल की कक्षाएं फिर से शुरू कीं. उन्होंने लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए कक्षाएं शुरू कीं!





मलाला स्कूल वापस गई, लेकिन अब जीवन पहले जैसा नहीं था. लड़कियों के स्कूल जाने पर प्रतिबंध लगाने की तालिबान की कोशिश ने अंतरराष्ट्रीय सुर्खियां बटोरी थीं. दोस्तों और पड़ोसियों ने सही अनुमान लगाया - कि मलाला ही, ब्लॉग लिखने वाली "गुल मकाई" थी. मलाला के ब्लॉग, भाषणों और इंटरव्यूज ने उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध बना दिया था. दक्षिण-अफ्रीका के आर्चबिशप डेसमंड टूटू ने, उसे एक पुरस्कार के लिए नामांकित किया था. पाकिस्तान ने उसके सम्मान में अपने शांति पुरस्कार का नाम बदलकर - नेशनल मलाला शांति पुरस्कार कर दिया था. 2011 के अंत तक मलाला का जीवन टीवी, रेडियो और समाचार पत्रों के साक्षात्कारों से भरा गया था. हर जगह उसकी तस्वीर छप रही थीं.

जल्द ही मलाला को पता चला कि तालिबान कहीं गए नहीं थे. तालिबान नेताओं ने मलाला को इंटरनेट पर धमकाना शुरू कर दिया. उनके अनुसार मलाला पश्चिम देशों की एक एजेंट थी. उन्होंने यह घोषणा भी की कि मलाला उनकी हिट लिस्ट में थी. पुलिस ने यूसुफजई परिवार को अपना घर छोड़ने की चेतावनी दी.

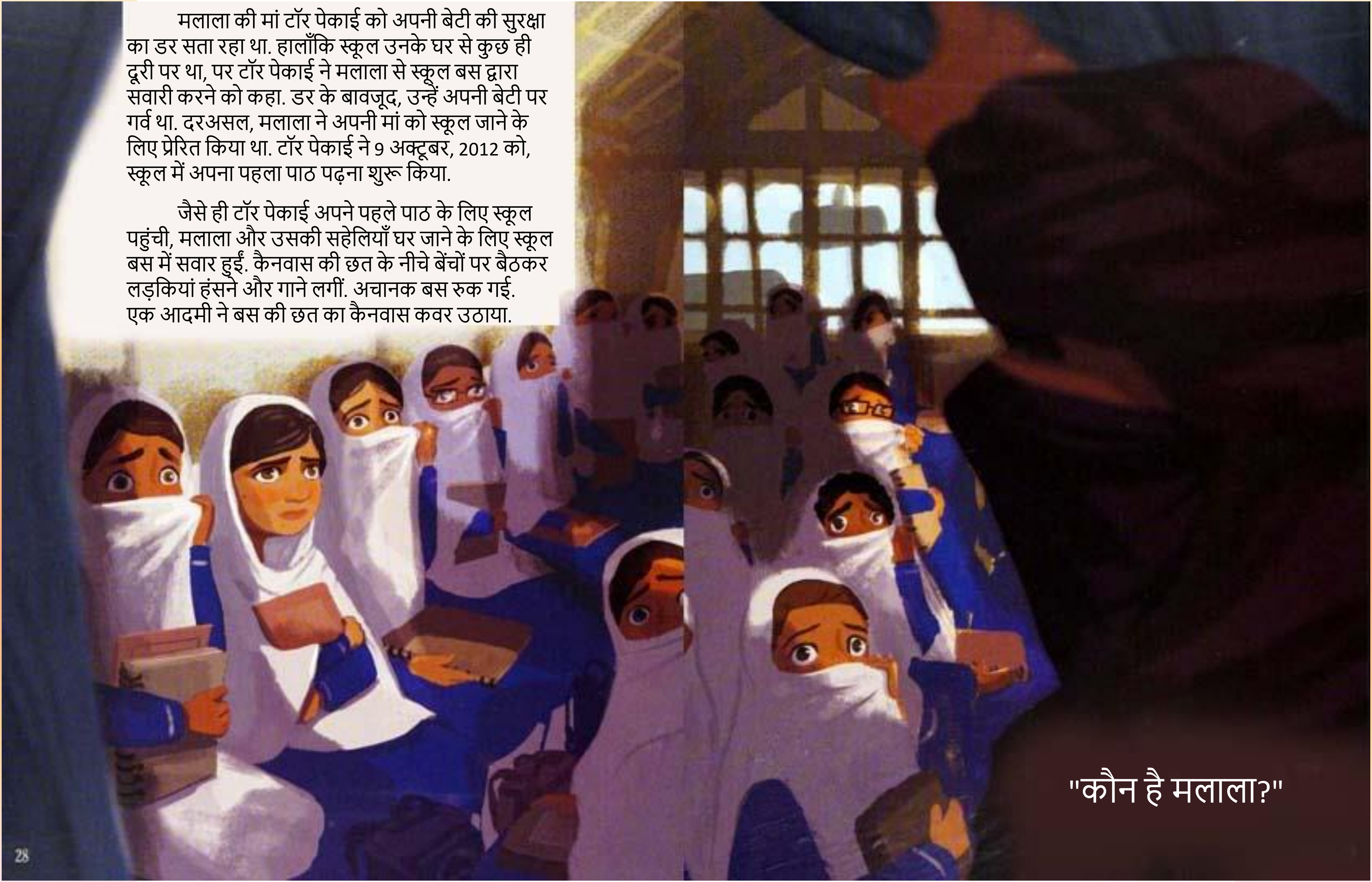
लेकिन मलाला ने छिपने से इनकार किया.

उसने चुप रहने से भी इंकार किया.

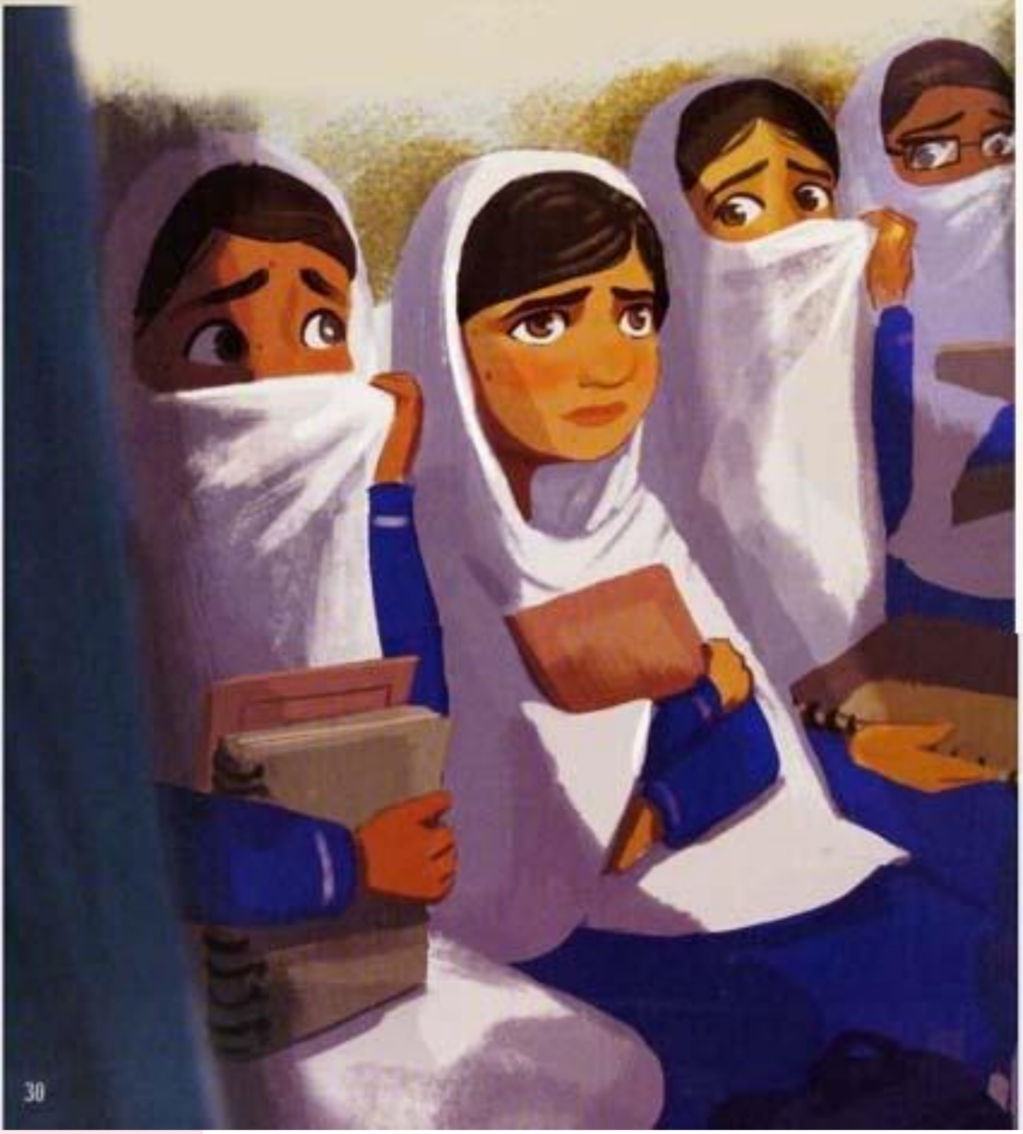


मलाला की मां टॉर पेकाई को अपनी बेटी की सुरक्षा का डर सता रहा था. हालाँकि स्कूल उनके घर से कुछ ही दूरी पर था, पर टॉर पेकाई ने मलाला से स्कूल बस द्वारा सवारी करने को कहा. डर के बावजूद, उन्हें अपनी बेटी पर गर्व था. दरअसल, मलाला ने अपनी मां को स्कूल जाने के लिए प्रेरित किया था. टॉर पेकाई ने 9 अक्टूबर, 2012 को, स्कूल में अपना पहला पाठ पढ़ना शुरू किया.

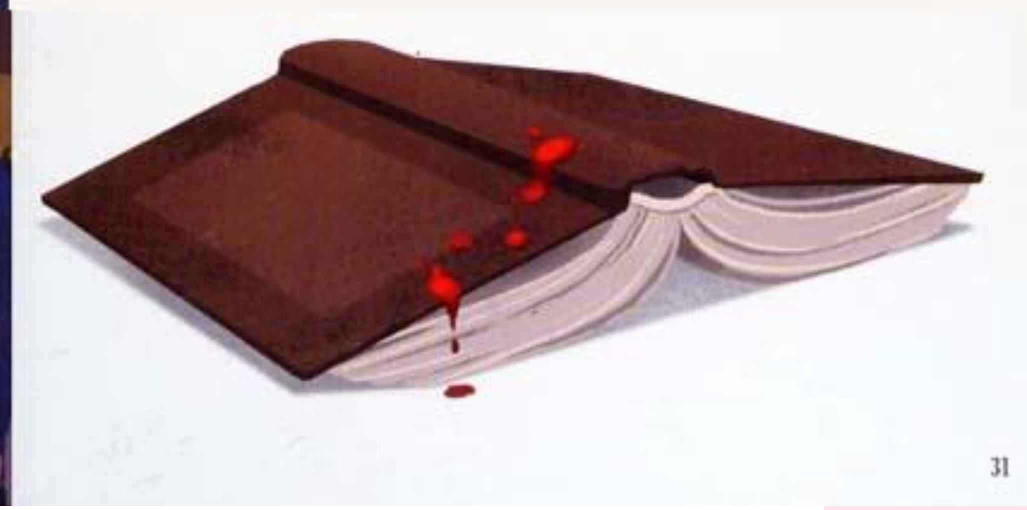
जैसे ही टॉर पेकाई अपने पहले पाठ के लिए स्कूल पहुंची, मलाला और उसकी सहेलियाँ घर जाने के लिए स्कूल बस में सवार हुईं. कैनवास की छत के नीचे बेंचों पर बैठकर लड़कियां हंसने और गाने लगीं. अचानक बस रुक गई. एक आदमी ने बस की छत का कैनवास कवर उठाया.



कोई नहीं बोला. पर बाकी लड़कियों की आँखें अपनी दोस्त की सुरक्षा के लिए उसकी ओर देखने लगीं. इतना ही काफी था. उस आदमी ने मलाला पर अपनी बंदूक तान दी.

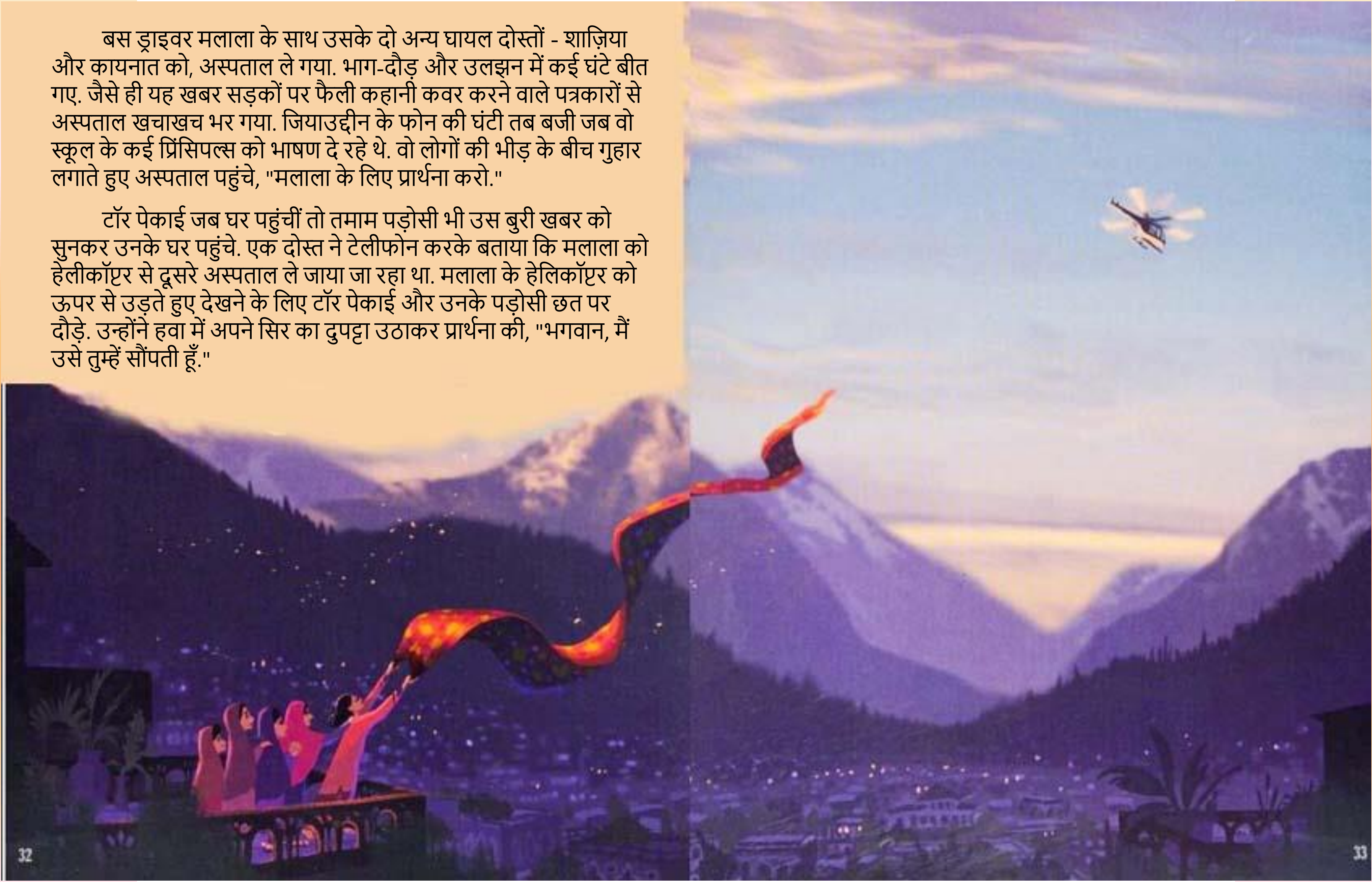


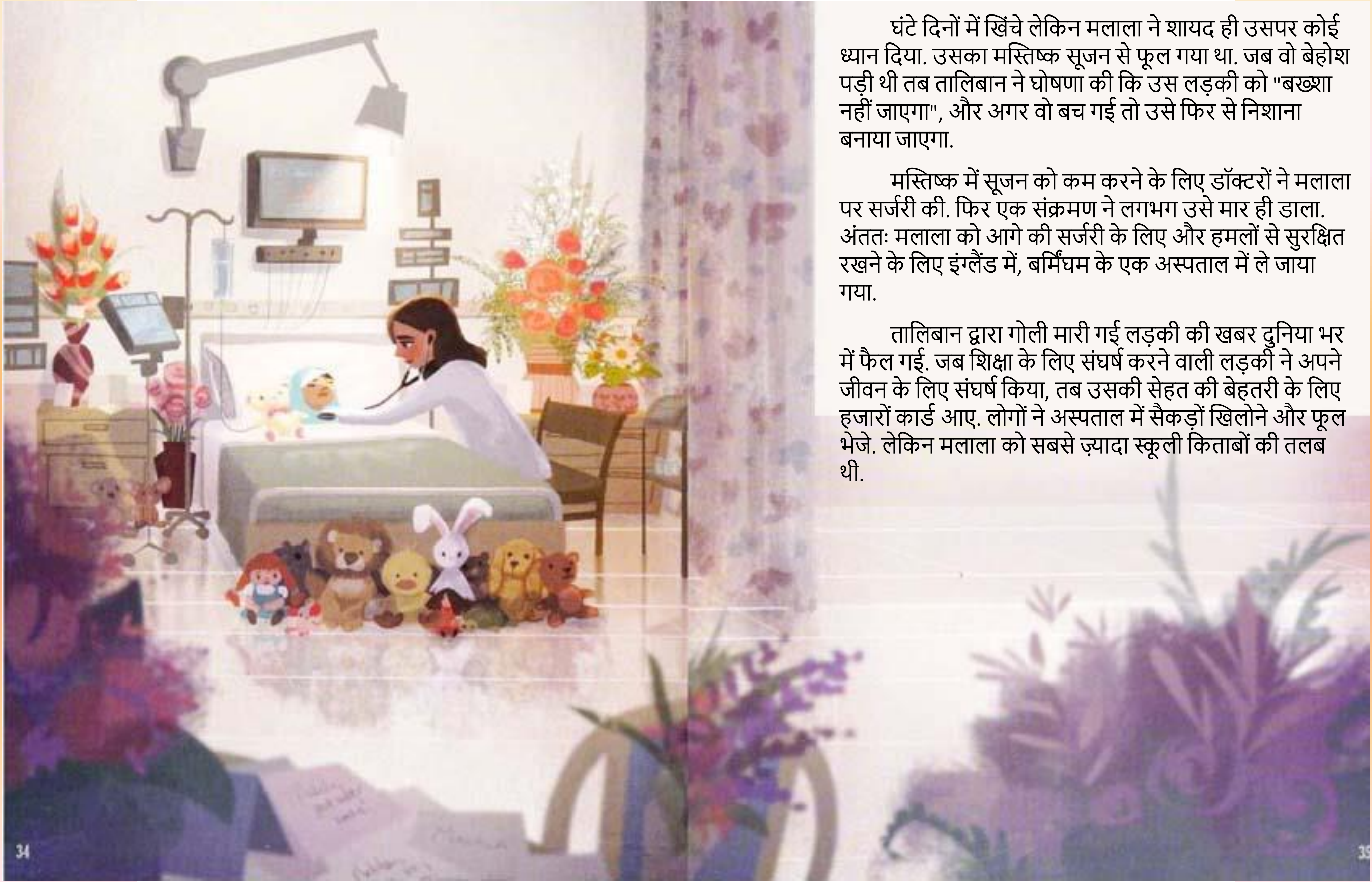
तीन गोलियों ने सन्नाटे को चकनाचूर किया.



बस ड्राइवर मलाला के साथ उसके दो अन्य घायल दोस्तों - शाज़िया और कायनात को, अस्पताल ले गया. भाग-दौड़ और उलझन में कई घंटे बीत गए. जैसे ही यह खबर सड़कों पर फैली कहानी कवर करने वाले पत्रकारों से अस्पताल खचाखच भर गया. जियाउद्दीन के फोन की घंटी तब बजी जब वो स्कूल के कई प्रिंसिपल्स को भाषण दे रहे थे. वो लोगों की भीड़ के बीच गुहार लगाते हुए अस्पताल पहुंचे, "मलाला के लिए प्रार्थना करो."

टॉर पेकाई जब घर पहुंचीं तो तमाम पड़ोसी भी उस बुरी खबर को सुनकर उनके घर पहुंचे. एक दोस्त ने टेलीफोन करके बताया कि मलाला को हेलीकॉप्टर से दूसरे अस्पताल ले जाया जा रहा था. मलाला के हेलिकॉप्टर को ऊपर से उड़ते हुए देखने के लिए टॉर पेकाई और उनके पड़ोसी छत पर दौड़े. उन्होंने हवा में अपने सिर का दुपट्टा उठाकर प्रार्थना की, "भगवान, मैं उसे तुम्हें सौंपती हूँ."





घंटे दिनों में खिंचे लेकिन मलाला ने शायद ही उसपर कोई ध्यान दिया. उसका मस्तिष्क सूजन से फूल गया था. जब वो बेहोश पड़ी थी तब तालिबान ने घोषणा की कि उस लड़की को "बख्शा नहीं जाएगा", और अगर वो बच गई तो उसे फिर से निशाना बनाया जाएगा.

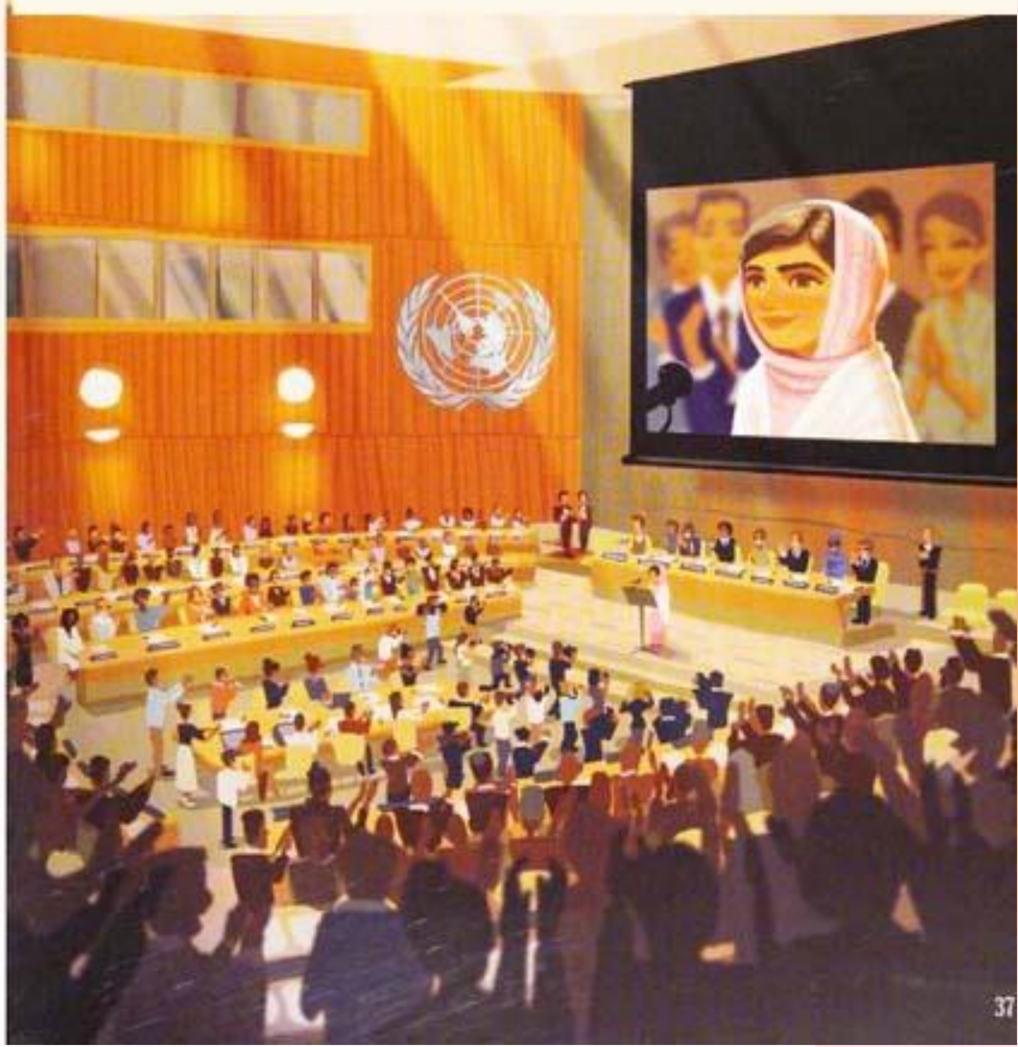
मस्तिष्क में सूजन को कम करने के लिए डॉक्टरों ने मलाला पर सर्जरी की. फिर एक संक्रमण ने लगभग उसे मार ही डाला. अंततः मलाला को आगे की सर्जरी के लिए और हमलों से सुरक्षित रखने के लिए इंग्लैंड में, बर्मिंघम के एक अस्पताल में ले जाया गया.

तालिबान द्वारा गोली मारी गई लड़की की खबर दुनिया भर में फैल गई. जब शिक्षा के लिए संघर्ष करने वाली लड़की ने अपने जीवन के लिए संघर्ष किया, तब उसकी सेहत की बेहतरी के लिए हजारों कार्ड आए. लोगों ने अस्पताल में सैकड़ों खिलोने और फूल भेजे. लेकिन मलाला को सबसे ज़्यादा स्कूली किताबों की तलब थी.

गोलियों ने मलाला को ज्यादा देर तक चुप नहीं किया. 12 जुलाई 2013 को, उसने संयुक्त राष्ट्र में विश्व नेताओं के सामने एक भाषण दिया. उसने घोषणा की. "एक बच्चा, एक शिक्षक, एक किताब और एक कलम दुनिया को बदल सकती है." दर्शकों ने उस लड़की के भाषण को खड़े होकर सराहा. उसने वाकई में सीखने के अधिकार के लिए एक ज़बरदस्त लड़ाई लड़ी थी.



डॉक्टरों ने अगले कुछ महीनों में मलाला के ऊपर कई और सर्जरी कीं. सर्जनों ने उसकी झुकी हुई आंख की मरम्मत की और उसके चेहरे की नसों को ठीक किया ताकि वो मुस्कुरा सके. उन्होंने उसके कान में एक श्रवण-यंत्र लगाया. मलाला तीन महीनों तक अस्पताल में रही. उस दौरान मिंगोरा में उसके स्कूल के दोस्तों ने उसके लिए एक सीट खाली रखी.



मलाला के बारे में अधिक जानकारी

मलाला का घर पाकिस्तान की स्वात घाटी के उत्तरी हिस्से में है. वो इलाका अफगानिस्तान के करीब है इसलिए वहां के लोगों के अफगान पड़ोसियों के साथ सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध हैं. 11 सितंबर, 2001 को, अमेरिका पर आतंकवादियों द्वारा हमला किए जाने के बाद, अमेरिका और उसके सहयोगियों ने अफगानिस्तान में अपनी सेनाएं भेजीं. तालिबान उस क्षेत्र में बहुत मजबूत हो गए थे और तालिबान के कई सदस्य स्वात घाटी में घुस गए थे. वहां तालिबान ने पाकिस्तानी लोगों पर अपने विचार थोपे.

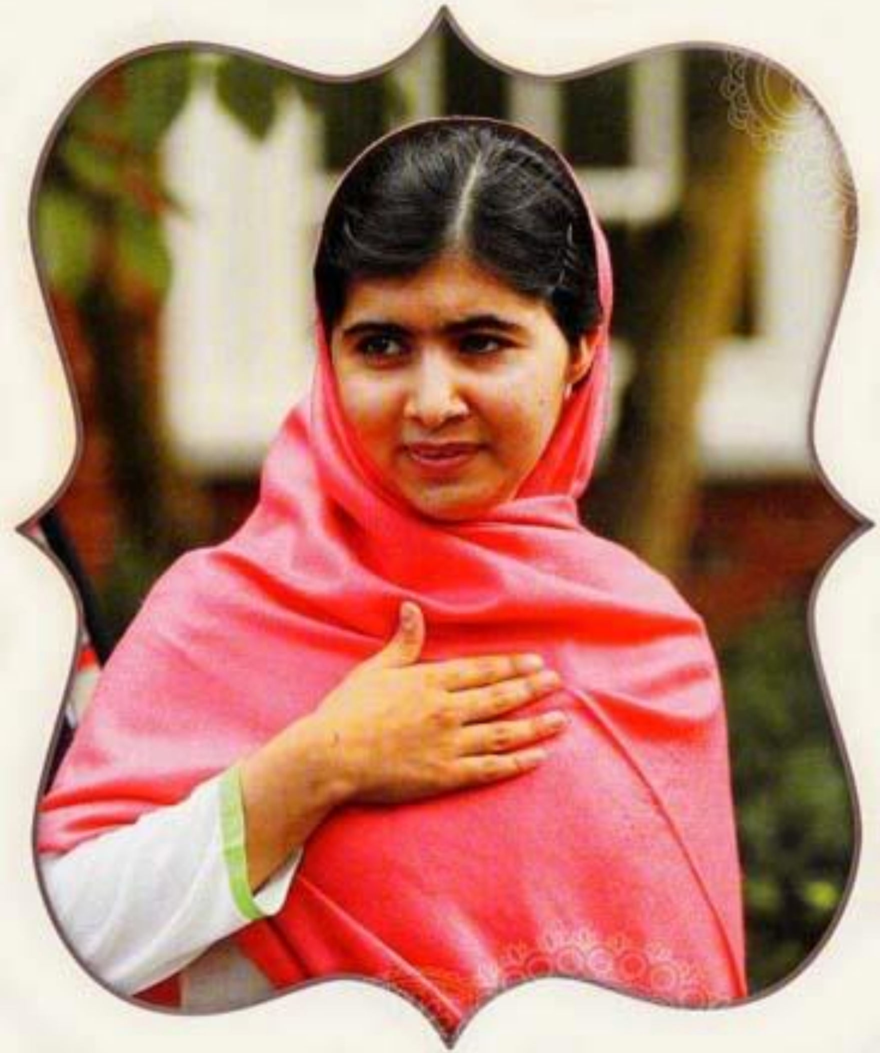
मलाला को उसकी बाईं आंख के सॉकेट के ऊपर गोली लगी थी. गोली उसके चेहरे से नीचे की ओर गई और उसके कंधे में जाकर धंसी. पहले तो डॉक्टरों को लगा कि वह बुरी तरह से घायल नहीं हुई थी, लेकिन बाद में उन्होंने पाया कि उसकी चोटें जानलेवा थीं. उसका दिमाग, चेहरे की नसें और सुनने की क्षमता सभी क्षतिग्रस्त हो गई थीं. उसके मस्तिष्क की सूजन को दूर करने के लिए डॉक्टरों ने उसकी खोपड़ी का एक हिस्सा निकाल दिया. बाद में उन्होंने हटाई गई खोपड़ी की हड्डी को, धातु की प्लेट से बदल दिया. उसकी दोस्त शाजिया और कायनात को मामूली चोटें आई थीं.

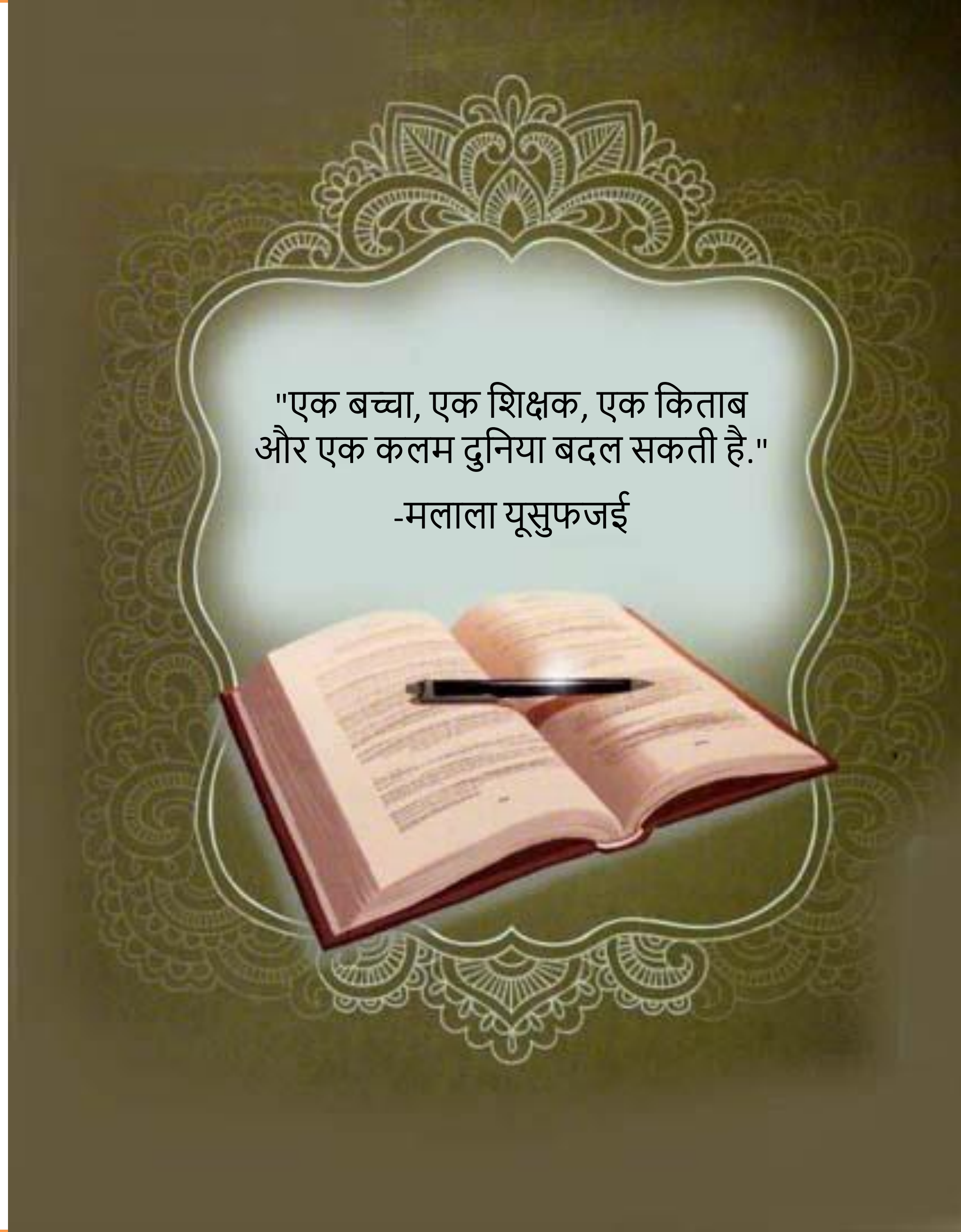
बर्मिंघम, इंग्लैंड का अस्पताल मलाला के लिए आने वाले हजारों कार्ड और उपहारों को बड़ी मुश्किल से रख पाया. मलाला को एक उपहार विशेष रूप से पसंद आया.

दिवंगत बेनजीर भुट्टो के बच्चों ने अपनी मां के दो शॉल, मलाला के लिए भेजे थे. हत्या से पहले तक भुट्टो पाकिस्तान की प्रधान मंत्री थीं. मलाला ने भुट्टो को अपना निजी हीरो माना. संयुक्त राष्ट्र के समक्ष बोलते हुए उसने बड़े गर्व से बेनजीर भुट्टो का सफेद शॉल पहना.

पाकिस्तानी सेना ने मलाला पर हमले के दो साल बाद शूटिंग में शामिल 10 लोगों के एक समूह को गिरफ्तार किया. लेकिन तालिबान, मलाला को लगातार धमकियां देता रहा.

मलाला शूटिंग के कई महीने बाद स्कूल लौटी. लेकिन लगातार धमकियों के कारण, वो उस सीट पर नहीं बैठ सकी जहाँ वो मिंगोरा में अक्सर बैठती थी. मलाल और उसका परिवार अब बर्मिंघम में रहता है. वो वहां अपनी शिक्षा जारी रखेगी ताकि वो एक दिन बंदूकों से नहीं बल्कि ज्ञान से लैस होकर पाकिस्तान लौट सके. मलाला और उसके पिता शिक्षा के बारे में लगातार अपने विचार रखते हैं. मलाला ने पाकिस्तान जैसे देशों में शिक्षा के लिए एक संस्था भी शुरू की है. उसने "हर घर में शांति" और "दुनिया में हर लड़के-लड़की को शिक्षा" देने की दिशा में काम करने का वादा भी किया है.




"एक बच्चा, एक शिक्षक, एक किताब
और एक कलम दुनिया बदल सकती है."
-मलाला यूसुफजई